रिकॉर्ड:-ओम् नमो शिवाय:••• ओम शान्तिः प्रातःक्लास 18-12-67

मीठे-2 बच्चो को बाप ने स्मृती दिलाई है कि सृष्टी का चक्र कैसे फिरता है। और जो नही जानते है उनको बाप ने ही कहा है कि कैसे क्लाईड फेथ मे चल रहे है। अब तुम बच्चे जानते हो कि हमने बाप से जो कुछ भी जाना है वो दुनियाँ मे कोई भी नही जानते है। बाप ने जो भी रास्ता बताया है यह वो ही कल्प पहले वाला रास्ता है। जिससे ही पावन बन कर विश्व का मालिक बनते है। हम सो पुज्य थे। परमात्मा के लिये कहेंगे कि आपही पुज्य हो पुजारि?नही। जो पुज्य विश्व का मालिक बनते है वो ही फिर पुजारी बनते है। स्मृती मे आता है कि यह तो बिलकुल ही राईट बाते है। सृष्टी की आद मध्य अन्त का समाचार बाप ही सुनाते है। और किसीको भी ज्ञान सागर नही कहा जा सकता है। कृष्ण की भी यह महिमा नही है। कृष्ण नाम तो शरीर का ही है नां।शरीर मे रहने वाली आत्मा मे तो यह सारा ज्ञान हो नही सकता। अभी तुम समझते हो कि उनकी आत्मा ज्ञान ले रही है। यह तो वण्डरफुल बाते है नां। बाप बिना कोई भी समझा नां सके।ऐसे तो बहुत ही साधु सन्त भिन्न-2 प्रकार के हठ योग आदिसिखाते है। वो सब है भक्ति मार्ग। भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग की महिमा भी बच्चो को समझाई है।सतयुग मे तो तुम कोईकी भी पुजा नही करते हो।वहां पर तो तुम पुजारी नही बनते हो। उनको तो कहा ही जाता है पुज्य देवी देवताये। थे। अब नही है।वो ही पुज्य अब फिर पुजारी बने है। बाप कहते है कि यह भी तो पुजा करते थे नां। सारी दुनियां ही इस समय तो पुजारी है। नई दुनियां मे तो एक ही पुज्य देवता धर्म रहता है। बच्चो को स्मृती मे आया कि बरोबर ड्रामा के प्लान अनुसार यह बिलकुल राईट है। गीता ऐपीसोड बरोबर है। सिर्फ गीता मे नाम बदल दिया है। जिसको समझाने के लिये ही तुम मेहनत करते हो। 2500वर्षोसे गीता कृष्ण ही की समझते आते है। अब एक ही जन्म मे समझ जावे कि नही गीता शिव भगवान ने सुनाईहै, समय तो लगेगा ही नां। भक्ति का भी समझाया है कि झाड कितना लम्बा चौडा है। तुम लिख सकते हो कि बाप हमको सिखा रहे है। गीता मेगीता मे कृष्ण का नाम डालने से वो झूठी गीता तुम पढ़ते आते हो। गीता का भी कहेंगे कि शिव जयन्ति सो ही गीता जयन्ति। कृष्ण जयन्ति सो गीता जयन्ति तो कह ही नही सकते है। जिनको निश्चय हो जाता है तो उस निश्चय मे ही समझते भी है। निश्चय ही नही है तो खुद भी मूंझते रहते है कि कैसे समझावे कोई हंगामा तो नही हो जावेगा। निडर तो अभी हुये ही नही है नां। निडर तो तब होवे जबकि पुरा देही-अभिमनी बन जावे। डरना तो भक्ति मार्ग मे होता है। तुम सभी तो हो ही महावीर। दुनियां भर मे यह कोई भी नही नही जानते है किमाया पर जीत कैसे पहनी जावे।तुम बच्चो को ही अब स्मृती मे आया है।आगे भी बाप ने कहा था कि मनमनाभव। पतित पावन बाप ही आकर यह समझाते है। मल गीता मे अक्षर है परन्तु ऐसे ही कोई भी समझते नही है। बाप कहते है कि बच्चे देही-अभिमनी भव। अक्षर तो है ही नां गीता मे आटे आटे मे लूण के मिसल। हर एक बात का बाप निश्चय बिठाते है। निश्चय बुधी विजयन्ति। तुम अभी बाप से वर्सा ले रहे हो। बाप कहते है कि गृहस्थ व्यवहार मे भी जरूर ही रहना है।सभी को तो यहाँ पर आकर बैठने की दरकार नही है नां। सर्विस करनी है सेन्टर्स खोलने है। तुम तो हो ही सैलवेशन आर्मी। ईश्वरिय-मिशन हो नां। पहले तो क्षुद्र मायावी मिशन के थे। अभी तो तुम ईश्वरिय मिशन के बने हो। तुम्हारा महत्व बहुत है। इन ल-न की क्या महिमा है। जैसे राजाये होते है वैसे ही यह भी राजाई करतेथे। बाकी इनको कहेंगे सर्वगुण सम्पन्न •••। विश्व का मालिक। क्योकि उस समय पर तो और कोई राजा ही नही होता है। अभी तो बच्चे समझ गये है कि वो विश्व का मालिक कैसे बनते है।अभी तो हम ही सो देवता बनते है तो इनको ही माथा क्यो झुकावें? तुम तो नालुज फुल बन गये हो। जिनको तो नालेज ही नही है वो तो माथा टेकते रहते है। तुम तो सभी के आक्युपेशन को अभी जान गये हो। चित्र रांग कौनसे है राईट कौनसे है वो भी तुम जान गये हो। समझा सकते हो।रावण राज्य पर भी समझा सकते हो कि यह रावण राज्य है उसको ही

अब आल लग रहीहै। भंभोर को आग लग रही है दिखाते है नां। भंभोर विश्व को कहा जाता है जो अक्षर गोय जो है उन पर ही समझाया जाता है। भक्ति मांग मे तो अनेक चित्रो बनाये है। वास्तव मे असली होती है शिव बाबा की पुजा। फिर ब्र, वि, शं की। त्रिमूर्ती जो बनाते है वो तो राईट है। फिर यह ल-न बस। त्रिमूर्ती मे तो ब्रहमा सरस्वती भी आ जाते है। भक्ति मांग मे तो अन्धश्रधा से कितनी पुजा करते है। कितने चित्र आद बनाते है। हनुमान की भी पुजा करते है। तुम भी अभी महावीर बनते रहते हो नां। मन्दिर मे भी कोई की हाथी पर कोई की घोडे पर स्वारि दिखाते है। अब ऐसी स्वारि थोडेई है। बाप कहते है महारथी। तो अर्थ निकालते है किमहारथी माना ही हाथी पर स्वारी। इन्होने तो फिर उस हाथी की स्वारि बना दी है। यह भी समझाया है कि कैसे गज को ग्राह खाता है। बाप समझाते है कि जो महारथी होता है उनका माया ग्राह हप कर लेती है। तुम ने तो अब ज्ञान की समझ आईहै कि अच्छे-2 महारथियों को भी माया ग्राह हप कर लेती है, खा जाती है। यह है ज्ञान की बाते। इनका वर्णन कोई और कर नही सकता। शास्त्रो मे लिखा हुआ है कि हनुमान पवन से पेदा हुआ। यह सारी तो है ही अन्धश्रधा की बाते। ऐसी बाते है थोडेई। यह तो है ही सारा बन्दर सेना। रावण का राज्य सारे विश्व मे है। तुम्हारे भी चलन बन्दर मिसल थी। बाप कहते है कि अब निरविकारी बनना है। देवीगुण भी धारन करने है। कल्प-2 तुम देवी गुणो की धारना करते आये हो। मुख्य बात तोएक ही बाप कहते है कि काम महानशत्रु है। इसमे ही हैमेहनत। इनपर ही त तुम विजय पाते हो। प्रजापिता का बने तो भाई-बहन हो गये। वास्तव मे तो असल मे तो तुम हो आत्मायें। आत्म-आत्मा से बात करती है। आत्मा ही कानो से सुनती है यह याद रखना पडें। हम आत्म को सुनाते है। देह को नही। असल मे तो हम आत्माये भाई-2 है। फिर आपस मे भाई-बहन भी है। सुनाना तो भाई को ही होता है नां। दृष्टी आत्मा तरफ जानी चाहिये। हम भाई को सुनाते है। भाई सुनते हो? हां मे आत्मा सुनता हूं। बिकानेर मे ऐक बच्चा हैजो सबैय ही आत्मा-आत्मा कह कर ही लिखता है। मेरी आत्मा
****
शरीर दवारा लिख रही है। मुझ आत्मा का यह विचार है। मेरी आत्मा यह करती है। तो यह आत्माअभिमनी बनना तो ही मेहनत की बाते है नां। मेरी आत्मा नमस्ते करती है। जैसे बाप कहते है कि रुहानी बच्चे तो भृकुटी की तरफ ही देखना पडें। तुम्हारी भी नजर आत्मा तरफ पडनी चाहिये। आत्मा मस्तिष्क के बीच मे है। शरीर पर नजर पडने से विघन आते है। आत्मा से बात करनी है। आत्मा को ही देखना है। देह अभिमन को छोडो। आत्मा भी ऐसे ही कहती है। नमस्ते=है=व= नमस्ते बाब। जानते हो कि यहां पर बाप भृकुटी के बीच मे बैठा है। उनको ही हम नमस्ते करते है। यह टेव डालना तो मेहनत की बात है। बुधी मे यह ज्ञान है कि हम आत्मा है। आत्मा ही सुनती है। यह ज्ञान आगे नही था। यह देह मिली है पार्ट बजाने लिये इसलिये देह पर ही नाम रखा जाता है। इस समय तुमको देही अभिमनी बन कर वापस जाना है। यह नाम धरा है पार्ट बजाने लिये। नाम बिना तो कारोबार चल ही नही सकें। वहां पर भी तो कारोबार चलेगी नां। परन्तु तुम सतोप्रधान बन जाते हो। इसलिय ह वहां पर कोई भी विकर्म नही बनेंगें। ऐसा काम ही तुम नही करेंगें जो कि विकर्म बने। माया का राज्य ही नही। अबबाप कहते है अबबाप कहते हैतुम आत्माओंको वापस जाना है। यह तो पुराने शरीर है। फिर जावेंगें सतयुग त्रेता में। वहां पर भी फिर आहस्ते-2 कला उतरती है। सतत्रेता मे तो एक है ही देवी देवता धर्म। लडाई झगडा तो कुछ भी नही है। वहां ज्ञान की दरकार नही है। यहां परतुमको ज्ञान कौन देतेहै। क्योकि दुर्गति को पाये हुये हो। कर्म तो वहां पर भी करना होताहै। परन्तु वो अकर्म हो जाता है। अबबापकहते है कर्म कार डे आत्म याद बाप को करे। आत्म ही सब कुछ करती है नां। नाम शरीर पर रखते है उनसे ही कारोबार चलती है। वहां पर पतित कोई भी होते नही है। तुम्हारे विकर्मबनते ही नही। रावण राज्य ही नही होता। तुम पपावन हो तो सारे कारोबार भी पावन होते है। सतोप्रधान रावण राज्य मे तुम्हारी कारोबार ही खोटी हो जाती है। इसलिय ही मनुष्य त

तीर्थ यात्रा आद पर जाते हैं। सतयुग में तुम कोई पाप नहीं करते जो तीर्थ यात्रा आद ~~क~~ पर जाना पड़े। तुम समझते हो हम सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान बने हैं। वहां हम जो भी काम करते हैं सत्य ही करते हैं। सत्य का वर मिल गया है। विकार की वहां बात ही नहीं। कारोबार में भी झूठ की दरकार नहीं रहती। यहां तो लोभ होने कारण चोरी ठगी आद करते हैं। वहां यह बातें होती नहीं। ड्रामा अनुसार तुम ऐसे फूल बन जाते हो। वह हैं ही निर्विकारी दुनिया। यह हैं विकारी दुनिया। सारा खेल बुधि ~~इ~~ में हैं। इस समय ही प्युर बनने लिए मेहनत करनी पड़ती हैं। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। योग बल है मुख्य। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग के ~~ज~~ यज्ञ तप आद से कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं होते। सब को सतोप्रधान सतो रजो तमो में जाना ही हैं। यह आदि मध्य अन्त का ज्ञान बाप के सिवाय कोई दे न सके। ज्ञान बड़ा सहज और रमणिक है। मेहनत ~~xxx~~ भी हैं । इस योग की ही महिमा हैं। जिससे तुमको सतोप्रधान बनना हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान~~x~~ बनाने का रास्ता बाप ही बतलाते हैं। दूसरा कोई यह ज्ञान दे ~~ज~~ न सके। भल कोई चन्द्रमा तक चले जाते हैं। कोई पानी से चले जाते हैं, परन्तु वह कोई राजयोग नहीं हैं। नर से नारायण तो नहीं बन सकते। यहां तुम समझते हो आदि सनातन ~~दे~~ देवी देवता धर्म के थे। जो फिर अब बन रहे हैं। स्मृति आई हैं। बाप ने कल्प पहले भी यह समझाया था। बाप कहते हैं निश्चय ~~xबुधि~~ बुधि ही विजयन्ति। निश्चय नहीं तो वह सुनने आवेंगे नहीं। निश्चय बुधि से फिर ~~सु~~ संशय बुधि भी बन जाते हैं। बहुत अच्छे2 महारथी भी संशय में आ जाते हैं। माया का थोड़ा तूफान आने से देहाभिमान आ जाता हैं। यह बाप दादा दोनो कम्बाईन्ड हैं। शिव बाबा ज्ञान देते हैं। फिर चले जाते हैं। वा क्या होता है वह कौन बतावे। बाबा से पूछें क्या आप सदैव हो। वा चले जाते हो। बाप से तो यह नहीं पूछ सकते हो ना। बाप कहते हैं मैं तो तुमको रास्ता बताता हूं। पतित से पावन होने का। ~~(आऊं और जाऊं)~~ मुझे तो बहुत काम करने पड़ते हैं बच्चों पास भी जाता हूं उनसे कार्य करता हूं। मैं तो कोई में भी प्रवेश कर सकता हूं। बच्चियां कहती भी हैं बाबा ने आकर मुरली चलाई। मेरे में तो ताकत नहीं थी। बाप कहते हैं क्यों नहीं कोई अच्छा, है उनका कल्याण करना है तो मुझे भी प्रवेश होकर करना पड़ता हैं। कल्प पहले भी कल्याण उनका मेरे दवारा ही हुआ था। बच्चे से हुआ या मेरे से- उनका तो कल्याण हो जाता हैं। इसमें कोई संशय न लाये , अपना काम हैं बाप को याद करना। संशय में आने से गिर पड़ेंगे। माया थप्पर जोर से ~~मारती~~ मार देती हैं। बाप ने कहा हैं बहुत जन्मों के अन्त के जन्म ~~में~~ के भी अन्त में मैं इन में प्रवेश करता हूं। बच्चों को निश्चय हैं बरोबर बाप ही हमको ज्ञान दे रहे हैं। और कोई दे न सके। फिर भी इस संशय से कितने गिर ~~पड़ते~~ पड़ते हैं। यह बाबा जानते हैं। तुमको पावन बनना हैं तो बाप कहते हैं मामेकं याद करो। और कोई बातों में नहीं पड़ो। यह संशय की बात करते हैं तो समझा मैं आता हैं पूरा निश्चय नही हैं। पहले तो एक ही बात को समझो जिससे तुम्हारा पाप नाश होने का हैं। बाकी वाहियात बातें करने की दरकार ही नहीं। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। फिर और बातों में क्या जाते हो। देखो कोई ~~प्रश्न~~ प्रश्न-उत्तर आद में मुझता है तो वहां ~~प्र~~ थमा देना चाहिए। पहले तो एक ही बात को समझो जिससे तुमको पतित से पावन बनना हैं। वह पुरुषार्थ करते रहो। संशय में आया तो छोड़ देंगे। फिर कल्याण ही न होगा। नब्ज देखी जाती हैं। संशय में है तो फिर एक पाईन्ट पर खड़ा कर देना हैं। बहुत युक्ति से समझाना पड़ता हैं। बच्चों को यह पहले निश्चय हो बाबा आया हुआ हैं। हमको पावन बना रहे हैं। यह तो खुशी की बात हैं। स्टुडेन्ट लाईफ इज द बेस्ट लाईफ कहा जाता हैं। परन्तु सब स्टुडन्टस को थोड़े ही खुशी रहती हैं। न पढ़ेंगे तो नापास हो जावेंगे। उनको खुशी भी क्यों आवे। स्कूल में पढ़ाई तो एक ही होती हैं। फिर कोई पढ़ कर लाखों की कमाई करते हैं- कोई5-10 रुपया कमाते हैं। तुम्हारी एमआबजेक्ट है ही नर से नारायण बनने की। राजाई स्थापन होती हैं ना। तुम मनुष्य से देवता बनेंगे। देवताओं की तो बड़ी राजधानी हैं। उसमें ऊंच पद पाना यह फिर हैं पढ़ाई और स्टेडिटी पी ~~स्ट~~ स्टेडिटी बड़ी अच्छी चाहिए। बाबा अपने लिए भी कहते हैं अभी कर्मातीत अवस्था नहीं बनी हैं। हमको भी सम्पूर्ण बनना हैं।

अभी बने नहीं हैं। 8-9 वर्ष टाईम तो पड़ा है ना। ज्ञान तो बड़ा सहज है। बाप को याद करना भी सहज है परन्तु जब करे ना। बाबा कहते हैं मैं भी नहीं कर सकता हूं। अभी कर्मातीत अवस्था आई थोड़े ही है। नो गपोड़ा भारे। कोई 2 कहते हैं हम तो नित्य याद करते हैं। बाप कहते हैं कहां जरूर भूल है। नित्य याद करते हो तो बाकी क्या चाहिए। देह का भी भान रहे नहीं। यह ही मुख्य बात है। तुम नंगे आये थे नंगे जाना है। देह की भी याद न रहे। इसमें तो टाईम लगता है। इतनी राजधानी भी जब स्थापन हो जावे ना। बाप हर बात समझाते रहते हैं। बच्चों की बुधि में है। आधा कल्प है ज्ञान फिर आधा कल्प है भक्ति। तुम खुद भी समझते हो सम्पूर्ण ज्ञान न होने कारण डर भी लगता है। रह छूट भी जाये, भागन्ती हो जाये। कोई तो ऐसे भी कहते हैं हमको आस बान्ध कर दो तो हम जाये अलग रहें। कोई के मुख में आ जाता है। कोई अन्दर में कहते हैं। हां रहते भी वह बाप की कशिश नहीं होती। समझते हैं इससे तो बाहर में जाकर रहेंगे। संशय हो जाता है ना। यह भी ड्रामा में नुंध है। बच्चों को तो बड़ी मस्ती रहनी चाहिए। हमको बाप मिला है वह ज्ञान का सागर है। वह आते हैं तो आकर ज्ञान देते हैं। यह है ही ज्ञान मार्ग। वह है भक्ति मार्ग। इसको अज्ञान मार्ग ही कहा जाता है। तुम अभी समझते हो इन से हम सीढ़ी नीचे उतरते हो आये हैं। अभी पुरुषोत्तम संगम युग पर फिर वापस जाते हैं। संगम युग जरूर आना चाहिए। नहीं तो सतयुग आवे कैसे। मनुष्य तो इन बातों में ख्याल भी नहीं करते हैं। क्योंकि वह तो आयु हो लाखों वर्ष समझ लेते हैं। तुम्हारी बुधि कहती है बरोबर कलियुग के बाद सतयुग आवेगा। यह रूहानी यात्रा बाप ही आये कर सिखलाते हैं। बाप तो पूरी समझ देते हैं। न समझते हैं वह भी होनहार ही है। यह नम्बरवार सारी राजधानी स्थापन होनी ही है। कितने नम्बरवार होंगे। बच्चे समझते हैं अवस्था अनुसार ही जन्म मिलता है। समझते तो बहुत हैं। बहुत अच्छे नामी-ग्रामी उनको भी संशय आ जाता है। कब कब एक दो में बात करते हैं तो यह बात समझ में नहीं आती। हम कहां फंस तो नहीं पड़े हैं। कोई जादूगरी तो नहीं। समझ लेना है संशय बुधि विनश्यन्ति। निश्चय बुधि विजयन्ति। संशय बुधि भी हो कर बहुत चले जाते हैं। चले भी गये हैं। घड़ी2 गिर पड़ते हैं। तो फिर चले जाते हैं। फिर उन्हों के चित्र भी खतम कर देते हैं। ऐसे ढेर समाचार बाप के पास आते हैं। विकार में गया। खलास। कोई फिर आ भी जाते हैं। यह तो बुधि से समझ सकते हैं। बरोबर ऐसा होता है। आस्ते2 कर बहुत विकारी हो जावेंगे। इस समय तुम मैनारिटी हो तो विघ्न जास्ती पड़ते हैं। मैजारिटी हो जावेंगे तो फिर विघ्न कम हो जावेंगे। अभी तुम समझते हो हम तो जाते हैं अपने घर। मेहनत भी अच्छी करनी पड़े। पद कोई कम थोड़े ही है। बुधि भी कहती है फिर यह ल०ना० की राजधानी जरूर आवेगी। परन्तु इन बातों पर विचार सागर मथन भी तुम्हारा ही होता है। और कोई का तो जरा भी नहीं चलता है। अच्छा।

बाप बच्चों को ही राजधानी का वर्सा देते हैं। कल्प पहले मुआफिक। ऐसे कल्प2 देते आये हैं। पुरुषार्थ भी तुम्हारा ऐसे ही चलता है। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ जरूर करावेगी। पुरुषार्थ बिगर तो रह नहीं सकेंगे। इसको कहा जावेगा ड्रामा ने पुरुषार्थ कराया। पुरुषार्थ बिगर तो प्रारब्ध नहीं बनती। पुरुषार्थ बड़ा कहा जाता है। पुरुषार्थ से प्रारब्ध मिलती है। सब से जास्ती पुरुषार्थ है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना। यह घड़ी2 याद करना इसमें ही मेहनत है। बाप ही राय देते हैं। मुझ अपने बाप को, धणी को याद करो। मैं घर का धणी हूं ना। रचता ही बैठ रचना के आदि मध्य अन्त का नालेज सुनाते हैं। अभी तुम बाप द्वारा जानते हो और पद पाते हो। ड्रामा में पार्ट है उनका है। और कोई यह सुना न सके। और कल्प पहले वाले जरूर आकर समझेंगे। राजधानी स्थापन की हुई है। सब जरूर आवेंगे। थोड़ी भी बाप के महावाक्य सुनी तो जरूर आ जावेंगे। आत्मा ने जो ज्ञान सुना है वह कब भूल नहीं सकता। ज्ञान का विनाश नहीं होता। सभी आवेंगे। जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊंच पद पावेंगे। शान्तिधाम सुखधाम को याद करना है। बाकी दुःखधाम को भूलना है। अच्छा।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते। नमस्ते। ओम।